© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 01 | January - March 2022

मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में स्त्री चेतना का विश्लेषण

कुमारी श्वेता आनंद

विषय– हिन्दी

शोध निर्देशक का नाम– डॉ. मीनू , सहायक प्रोफेसर (ओ.पी.जे.एस. विश्वविद्यालय)

सार

कहानी की पृष्ठभूमि छोटी लेकिन अर्थपूर्ण होती है। जीवन के मानवीय सत्यों का उद्‌घाटन करना ही कहानी है। अपने कथ्य में कहानी जितनी मजबूत होती है उतना ही उसका शिल्प भी बेहतर होना चाहिए क्योंकि कहानीकार अगर कहानी के शिल्प को नहीं समझता है तो रोचकता पैदा नहीं कर पाएगा। कहानी फिर कथा बनकर रह जाएगी जिसका कोई आदि और अंत नहीं होता। मन्नू भण्डारी मंझी हुई कथाकार हैं। उनकी कहानियों का शिल्प ही उन्हें अपने समकालीनों से अलग करता है। "यही सच है' कहानी में शिल्प की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि उसमें बाहय घटनाओं के साथ ही पात्रों की आंतरिक मनःस्थिति को भी चित्रात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

जैसा कि मैंने पहले भी कहा कि यह कहानी डायरी फॉर्म में है। कहानी की मुख्य नायिका दीपा अपने साथ होने वाली घटनाओं को स्वयं लिख रही है। हिंदी कहानी में मन्नू भण्डारी ने पहली बार इस शैली का प्रयोग किया है जो कि कहानी को रोचक बनाता है। नई कहानी आंदोलन में कहानीकार के सामने एक चुनौती थी कि वह शिल्प में कुछ नया करे। मन्नू भण्डारी ने अपनी हर कहानी में कुछ नया ही किया है। 'यही सच है' में भी वह डायरी शैली के माध्यम से नए तरह की बुनावट सामने लाती हैं जिसमें दीपा कहानी की मुख्य पात्र भी है और मॉडरेटर भी। नई कहानी में इस तरह का प्रयोग पहले कभी नहीं हुआ– यही सच है' कहानी की शिल्प–योजना कुछ विशेष प्रयोगों के कारण अत्यंत चर्चित रही है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता है– डायरी शैली का प्रयोग।

प्रमुख शब्दः– मन्नू, शैली और विशेष प्रयोग।

प्रस्तावना

मन्नू भंडारी ने परिवार और समाज में महिलाओं की सामाजिक और सांस्कृतिक तस्वीर को एक अलग आयाम प्रदान करने में योगदान दिया है। ये भेदभावपूर्ण सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्य, दृष्टिकोण और प्रथाएं जो महिला मानस के व्यक्तित्व को पंगु बना देती हैं, उनकी कहानियों में प्रकाश डाला गया है। यहां मैं भंडारी की दो कहानियों 'साजा' (वाक्य) और 'एक कामजोर लड़की की कहानी' पर चर्चा करना चाहता हूं।

© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 01 | January - March 2022

सजा एक संवेदनशील युवा लड़की आशा की कहानी है, जो अपने सामने आने वाली कठोर परिस्थितियों के कारण उम्र से पहले परिपक्व हो जाती है। यहां भंडारी ने मूल निवासी और अर्जित विचारों के साथ–साथ शिक्षा के बाद की समस्या के बीच सामंजस्य स्थापित करने के अपने प्रयासों की भी पड़ताल की। आशा के पिता को बीस हजार रुपये के गबन के लिए सजा सुनाई जानी थी जो वास्तव में किसी और ने की थी। उसे उसकी नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया है और उसके आशा के मामा ने, जो अभी–अभी इंग्लैंड से लौटा है, उसके पिता को बचाने की सारी जिम्मेदारी ली। आशा और उसकी माँ समाज के अन्याय की खामोश पीड़ित हैं जबकि आशा की चाची (चाचा की पत्नी) को हावी और बोल्ड के रूप में चित्रित किया गया है। भंडारी अक्सर अपने नायक को या तो किए गए अन्याय से अनजान रखती है या उसके प्रति पूरी तरह चुप रहती है। यह साबित करने के लिए कि इस तरह की असमानताओं को कायम रखने वाले समाज में बचपन से ही उनका पालन–पोषण हुआ है। यह एक सच्चाई है कि आज भी एक महिला को बचपन से ही अपने लिंग के प्रति पूरी तरह जागरूक किया गया है। जैसे ही वह यौवन तक पहुँचती है, उसके आंदोलनों पर प्रतिबंध लागू कर दिया जाता है। कोई भी लड़की, जो इस तरह के प्रतिबंधों के खिलाफ विद्रोह करने की कोशिश करती है।

मन्नू भंडारी की जीवन यात्रा

मन्नू भंडारी का जन्म 3 अप्रैल 1931 को मध्यप्रदेश में मंदसौर जिले के भानपुरा ग्राम में हुआ था। मन्नू के बचपन का नाम महेंद्र कुमारी था। उनके पिता सुखसमपत राय भंडारी साहित्य, राजनीति और समाज–सेवा के क्षेत्र में अपने समय के बहुत ही प्रसिद्ध व्यक्ति थे। मन्नू भंडारी एम.ए तक की शिक्षा प्राप्त कर दिल्ली के मिरांडा हाउस में अध्यापिका रही। लेखन का संस्कार उन्हें विरासत में मिला था। लेखन के लिए ही उन्होंने अपने 'मन्नू' नाम का चयन किया था। मन्नू भंडारी हिन्दी की लोक प्रिय कहानीकारों में से एक हैं। इनकी कहानियों में एक स्वतंत्र, न्यायप्रिय और संतुलित दृष्टि का चौमुख रचनात्मक बोध है। प्रेम, दाम्पत्य और पारिवार संबंधी कथानक के जरिए कथाकार अपनी बहुमुखी सजगता का परिचय दे देती है। अपनी सादगी और अनुभूति की प्रमाणिकता के कारण इनकी कहानियाँ विशेष रूप से प्रशंसा प्राप्त करती है। हिन्दी कहानी में नया तेवर और नए स्वाद के साथ पांच दशक पूर्व जब मन्नू जी का पदार्पण हुआ, उसी समय इस धरोहर को हिन्दी पाठकों ने बड़े आराम से पहचान लिया था। मन्नू भंडारी हिन्दी कहानी के उस दौर की एक महत्वपूर्ण लेखिका हैं, जिसे 'नई कहानी आन्दोलन' के नाम से जाना जाता है। उनकी कथा–यात्रा हिन्दी कथा साहित्य में एक नया मोड़ लेकर आया। पारिवारिक संबंधों की गहरी होती हुई दरारें, अन्तर्द्वन्द से उठता हुआ सैलाब, पात्रों की उठती–गिरती मानसिकता मन्नू जी के कथा साहित्य के सबसे महत्वपूर्ण पहलू हैं। परिवार एक पवित्र तथा उपयोगी संस्था है। इसमे मानव की सर्वांगीण उन्नति का आधार, सहयोग, सहायता

और पारस्परिकता का भाव रहता है। यह भाव वह शक्ति है जिसके आधार पर मनुष्य जंगली स्थिति से उन्नति करता–करता आज की सभ्य स्थिति में पहुँचा है। परिवार से मिलकर समाज और समाज से मिलकर राष्ट्र का निर्माण होता है। सामंती समाज में, सामाजिक संस्थाओं में परिवार का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। सम्पूर्ण सामाजिक संस्थाओं में परिवार ही वह मूलभूत सामाजिक व्यवस्था है।

भंडारी ने महिलाओं के संघर्षों और कठिनाइयों को उजागर किया

'आपका बंटी' और 'महाभोज' जैसी चर्चित कृतियों की रचना करने वालीं प्रसिद्ध लेखिका मन्नू भंडारी महिलाओं को एक नई रोशनी में चित्रित करने के लिए जानी जाती हैं। उन्होंने लघु कथाएं, उपन्यास और नाटकों को कलमबद्ध किया। उनके आख्यानों ने उन संघर्षों और कठिनाइयों को उजागर किया है, जिनका महिलाओं ने अतीत में लगातार सामना किया है।

1931 में मध्यप्रदेश के भानपुरा में जन्मीं भंडारी की प्रारंभिक शिक्षा अजमेर में हुई। उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और काशी हिंदू विश्वविद्यालय से हिंदी भाषा और साहित्य में एमए किया। उनका विवाह प्रसिद्ध साहित्यकार राजेंद्र यादव से हुआ था। राजेंद्र यादव को भंडारी के साथ मिलकर 'नयी कहानी' के नाम से हिन्दी साहित्य में एक नयी विधा का सूत्रपात करने का श्रेय दिया जाता है। मन्नू भंडारी को उत्कृष्ट साहित्यिक उपलब्धियों के लिए दिल्ली शिखर सम्मान और केके बिरला फाउंडेशन के व्यास सम्मान सहित कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'यही सच है' को लेकर 1974 में बनी फिल्म 'रजनीगंधा' ने 1975 में कई फिल्मफेयर पुरस्कार जीते थे। भंडारी के परिवार में उनकी बेटी रचना यादव हैं। प्रसिद्ध साहित्यकार मैत्रेयी पुष्पा ने कहा–कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी और ऊषा प्रियंवदा 'नई कहानी' के जमाने में तीन बड़ी लेखिकाएं हैं। उससे पहले स्त्रियों का लिखा हुआ उतनी गंभीरता से नहीं लिया जाता था। तब महादेवी वर्मा सहित कई लेखिकाएं भी थीं। मन्नू भंडारी के लेखन का तेवर लचीला था। मैंने उनकी कृति 'आपका बंटी' और 'महाभोज' भी पढ़ी है। 'आपका बंटी' पर हमने कुछ सवाल भी उठाए थे, लेकिन उन्होंने एक तलाकशुदा स्त्री के जीवन के बारे में काफी दृढ़ता से लिखा। जब तक उन्होंने नहीं लिखा था, तब तक तलाकशुदा स्त्री की पीड़ा उस तरह सामने नहीं आई थी।

हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श

हिन्दी के आरंभिक उपन्यासों में स्त्री चेतना के बीज पाये जाते हैं। प्रथम गद्य रचना 'देवरानी–जेठानी की कहानी', 'वामा शिक्षक', 'भाग्यवती', 'सुन्दर शिक्षक' और 'परीक्षा गुरु' आदि में स्त्री चेतना ही निहित है। जैसे–जैसे समाज में नारी की स्थिति में बदलाव आया है, वह अपने अधिकारों के प्रति सजग और सचेत हुई है। स्त्री अपनी गुलाम मानसिकता वाली छवि, सती–साध्वी या पति–परमेश्वरी को तोड़कर अपना स्वतंत्र वजूद बनाना चाहती है। आधुनिकता

© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 01 | January - March 2022

और बौद्धिकता के कारण वह अपने निज स्वरूप और अपनी भावनाओं एवं इच्छाओं के प्रति सचेत हुई है। महादेवी वर्मा के अनुसार –''हमें न किसी पर जय चाहिए, न किसी से पराजय, न किसी पर प्रभुता चाहिए, न किसी पर प्रभुत्व, केवल अपना वह स्थान वे स्वत्व चाहिये जिनका पुरुषों के निकट कोई उपयोग नहीं है, परन्तु जिनके बिना हम समाज का उपयोगी अंग नहीं बन सकेगी।''

समकालीन महिला लेखन नारी के अस्मिता व स्वतंत्र अस्तित्व की खोज का लेखन है। उन्होंने सदियों की चुप्पी को तोड़ा है। वह पुरानी रूढियों, रीति रिवाजों को मानने के लिए विवश नहीं है। अपने निर्णय वह स्वयं लेती है। 'कोहरे' की नायिका कहती है कि ''औरतें जितनी कमजोर दिखती है उतनी ही वह भीतर से ठोस होती है।'' चित्रा मुद्गल के शब्दों में ''नारी चेतना की मुहिम स्वयं स्त्री के लिए अपने अस्तित्व को मानवीय रूप में अनुभव करने और करवाने का आन्दोलन है कि मैं भी मनुष्य हूँ और अन्य मनुष्यों की तरह समाज में सम्मानपूर्वक रहने की अधिकारी हूँ।'' उनका 'आवां' उपन्यास स्त्री चेतना को अभिव्यक्ति देता समय से पड़ताल है। मैत्रेयी पुष्पा की 'फैसला' कहानी स्त्री का वह तेवर और पहचान है जो पुरुष वर्चस्व के आतंक तले कभी अभिव्यक्ति नहीं पा सका, लेकिन अब उभर रहा है। आज का महिला लेखन किसी विशिष्ट चौखट में बंधने को तैयार नहीं।

मन्नू भण्डारी की रचना में स्त्री–विमर्श

एक आम कहावत है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है, लेकिन मैं समझती हूँ कि ये गलत है। बल्कि स्त्री ही स्त्री के मन की थाह पा सकती है। उसकी पीड़ा को दिल से महसूस कर सकती है, उसके दर्द को अभिव्यक्त भी कर सकती है और यदि वह स्त्री साहित्यकार हो तो क्या कहने। यही वजह है कि स्त्री विमर्श के दौर से मन्नू भंडारी की कहानियों से गुजरना आश्वस्तीकर है इन अर्थों में भी कि लेखिका का स्वयं स्त्री होना यहाँ किसी अकारण पक्षधरता का कारण नहीं बनता, न ही पुरुष को खलनायक का चरित्र देने का लालच होता है।

बात करते हैं 'आपका बेटी' की। एक स्त्री भावनाओं में इस कदर डूब सकती है, इसे केवल इससे ही समझ सकते हैं कि जब मन्नू जी को किसी ने एक बच्चे बंटी के बारे में बताया तो उनकी आँखों में सिर्फ बंटी के ही चित्र बनते रहे, वे सारा दिन उसी के बारे में सोचती रहीं और वे कहती हैं घर लौटकर मैंने पाया कि 'बंटी एक आकार ग्रहण करने लगा है' अनुभूति ऐसी गोया कोख में अपना अंश आकार ले रहा है। सचमुच ही एक साहित्यकार के लिए उसका साहित्य उसके शिशु की भाँति ही होता है। जब बंटी शकुन की ढोडी पर स्थित तिल पर हाथ फिराता है, निश्चय ही उस वक्त उसे अपने दाम्पत्य जीवन से जुड़ी बातें एक कसक के साथ याद आती हैं। पहले वह उसका हाथ झटकती है फिर सहमें बंटी को पुनः लाड़ से कहती हैं– फिरा! तझे अच्छा लगता है ना? ऐसी सूक्ष्मता से नारी मन की अभिव्यक्ति विरले ही कर पाते हैं।

शकुन के जरिये एक स्त्री के मन की छटपटाहट स्पष्ट महसूस होती है, जब शकुन के सामने अजय के हस्ताक्षर युक्त तलाक के कागज रखे होते हैं। एक अध्याय था, जिसे समाप्त होना था और वह हो गया। दस वर्ष का यह विवाहित जीवन एक अंधेरी सुरंग में चलते चले जाने की अनुभूति से भिन्न न था।

उपसंहार

स्त्री मन के अंतर्विरोधों को इतने स्पष्ट रूप से पहले अभिव्यक्त नहीं किया–"डायरी शैली का एक विशेष व्लाभ इसकी चरित्र–योजना में दिखाई पड़ता है। चूँकि डायरी लिखते समय व्यक्ति पूरी ईमानदारी का परिचय देता है और बाह्य जीवन में नहीं कही जा सकने वाली बातें भी खुलकर लिखता है, इसलिये दीपा का चरित्र मनोविज्ञान की उन सूक्ष्मताओं को छू सका है जो शायद नई कहानी में भी दुर्लभ है।

इसी साफगोई का परिणाम है कि कुछ पारंपरिक समीक्षक दीपा के चरित्र को नैतिक रूप से उचित नहीं मानते। डायरी शैली से एक समस्या यह उत्पन्न हुई कि एक चरित्र का पूरा सच उभर गया किंतु बाकी चरित्रों (निशीथ, संजय आदि) के वही पक्ष उभरे जो बाह्य जीवन में व्यक्त होते हैं।"

निश्चित रूप से यही सच है' की भाषा अनूठी है। उसमें भावावेग है। काव्यात्मकता है जो पाठकों को कभी दीपा की साफगोई से जोड़ती है तो कभी निशीथ की मितभाषिता से। संजय का निश्छल्ष और सहज प्रेम जिस भाषा में व्यक्त हुआ है वह स्त्री–कथा साहित्य की दृष्टि से नई भाषा है। पहले साहित्य में स्त्री की भाषा में इतनी स्पष्टता नहीं थी। स्त्रियोचित व्यवहार कहानी में आ ही जाता है। दीपा उस बनावटी व्यवहार से बाहर निकल अपने लिए उस दुनिया का चुनाव करती है जो उसके लिए स्वाभिमान से भरी हो।

संजय ने उसे जो प्रेम दिया है उसे वह धोखा नहीं देना चाहती है क्योंकि वह खुद धोखा खा चुकी है। इस कहानी के चरित्र वैसे बड़े सहज हैं पर वह जो दिखते हैं, वह हैं नहीं। उनके अंदर एक और दुनिया है लेकिन वह यथार्थ से परिचित है–"जहाँ तक शेष शिल्पगत तत्त्वों का प्रश्न है, वे नई कहानी की प्रतिनिधि विशेषताओं से मित्रते–जुलते हैं। इसकी भाषा सघन अनुभूति प्रधान भाषा है।

सन्दर्भ

- खान, एम. फिरोज (डॉ.) नियाब, शगुफ्ता (डॉ.) नारीविमर्श: दशा और दिशा, आकाश पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, ई–10/663, उत्तरांचल कॉलोनी, लोनी बोर्डर, गाजियाबाद–201102, प्रथम संस्करण– 2010
- बद्रीनारायण, साहित्य और समय (अन्तः सम्बन्धों पर पुनर्विचार) वाणी प्रकाशन, 4695, 21ए, दरियागंज, नयी दिल्ली–110002, प्रथम संस्करण : 2010.

- वर्मा, रतनकुमारी, महिला साहित्यकारों का नारी चित्रण (हिन्दी कहानियों के संदर्भ में), अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स 4378/4, 105, जे. एम. डी. हाउस, मुरारी लाल स्ट्रीट, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली–11002, संस्करण : 2009
- नारी विमर्श दशा और दिशा, खान, एम. फिरोज (डॉ.) नियाब, शगुफ्ता (डॉ.)
- साहित्य और समय (अन्तः सम्बन्धों पर पुनर्विचार), बद्रीनारायण।
- महिला साहित्यकारों का नारी–चित्रण (हिन्दी कहानियों के संदर्भ में), वर्मा, (श्रीमती) रतन कुमारी (डॉ.),
- एक कहानी यह भी, मन्नू भण्डारी,
- द सब्जेक्शन ऑफ विमैन, जॉन स्टुअर्ट मिल अनु. युगांक धीर।